INTERNATIONAL JOURNAL

ETERNITY

Research Evolution & Analysis

ISSN 2321-3302

August 2015 Vol:III Issue – IV

Chief Editor

Prof. Dinesh k. Bhoya

Green Flag Foundation

A National Level Quality Book Publication

NATIONAL INSTITUTE OF SCIENCE COMMUNICATION AND INFORMATION RESOURCES

(Council of Scientific and Industrial Research)

14, Satsang Vihar Marg, New Delhi 110 067 &

Dr. K. S. Krishnan Marg (Near Pusa Gate) -110 012

Ms. V. V. Lakshmi, Head, National Science Library

Phone: 91-11-2686 3759

E-mail: vvlakshmi@niscair.res.in website: www.niscair.res.in

NSL/ISSN/INF/2013/1139 Dated: May 16, 2013

Green Flag Foundation,
Sonasan,
Gujarat

Dear Sir/ Madam,

We are happy to inform you that the following serial(s) published by you has been registered and assigned ISSN (Print)

ISSN 2321 –3302 Eternity: Research, Evolution and Analysis

It is important that the ISSN should be printed on every issue preferably at the right hand top corner of the cover page.

The Indian National Centre will be responsible for monitoring the use of ISSN assigned to Indian Serials and for supplying up to-date data of the same to the International Centre for ISSN, Paris. For this purpose we request you to send us the forth coming issue of your serial on complimentary basis.

We solicit your co-operation in this regard.

Yours sincerely

V.V. Lakshmi

(V.V. Lakshmi)
Head
National Science Library

Please don't forget to send a sample issue of the journal/URL with ISSN printed on it.

Contact : Ms. Shobhna Vij
e-mail : issn.india@niscair.res.in
phone : 011-26516672

August 2015 Vol:III Issue – III ISSN 2321-3302 The International Multidisciplinary Journal
ETERNITY
Research Evolution & Analysis

हिन्दू संस्कृतिमे दान -महिमा

डॉ. राधाबहन प्रेम. पटेल
जी. डी. मोदी आर्टस कॉलेज, पालनपुर, ४४, आनंदनगर, जामपुरा स्कूल के पीछे,
पालनपुर(बी. के. -गुजरात) (मो -9429464982)

दानाय लक्ष्मी : सुकृताय विद्या चिन्ता परब्रहमविनिश्चिताय ।
परोपकाराय वचांसि यस्य वंन्यस्त्रिलोकीतिलकः स एकः।।

पौराणिक कथानुसार एकबार देवता दानव और मानव ब्रहमाजीके पास गये और उनसे कहा 'भगवन । हम प्रगति करें, सुखी रहें और यशस्वी बनें इसके लिए हमे उपदेश दीजिये हम क्या करें ? ब्रहमाने कहा 'द'

पुन : उन्होने हँसकर कहा समज गये, देवता बोले हमे दमन करना चाहिए । दानवोंने कहा हमे दया रखनी चाहिये । मानव बोले-हमें दान करना चाहिये। देवताओंकी प्रवृत्ति भोगमयी होती है। अतः उन्हे दमन करना चाहिये। दानव हिंसक होते है इसलिये उन्हे दयाका व्यवहार करना चाहिये और मनुष्योकी प्रवृत्ति अतिसंग्रहकी है, अतः उनके लिए दान ही उचित है ।

दान का अर्थ केवल धनका ही नही, बल्कि दान का अर्थ भगवानके प्रति मन, बुध्दि, श्रध्धा और विश्वास अर्पित करना भी है सब कुछ भगवानने ही हमे दिया है हमारा अपना कुछ नही हेा भगवान द्वारा दी हुई वस्तु भगवानको ही देना दानका सच्चा स्वरुप है । दान आत्मकल्याणका महत्वपूर्ण साधन है । भगवान्ने गीता (१८-५) मे कहा हो-

यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ।।

अर्थात यज्ञ, दान और तपरुप कर्मका त्याग कभी नहीं करना चाहीये । ये मनीषियोंको पवित्र करते है । दान करने की सामग्रियाँ तथा शक्तियाँ अनन्त रुपोमें भगवान्ने हमे दी है । उनका सदुपयोग करनेकी विवेक शक्ति भी उन्होने हमे प्रदान की हो लेकिन उधर ध्यान नहीं देनेके कारण उस नित्यप्रभुके नित्ययोगका अनुभव हमें नहीं होता। यदि प्रभुको अपने हृदयमें देखना चाहते हो तो सत्संग, स्वाध्याय, नाम-कीर्तन तथा प्रभुकी लीलामें अपने मन एवं बुध्धिको जोड दो यही जीवन्दान सच्चा पारमार्थिक दान है । भगवान्ने भी इसी जीवनदानके विषयमें कहा है ।-

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुध्दिनिवेशय ।
नवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।।
(गीता-१२/८)